Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part -1 (Hons)
Paper -I
Indian Philosophy

LIC भारतीय जीवन बीमा निगम LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

1 "Ramanuja's criticism of Shankara's Maya Vada."
(रामानुज : शंकर के मायावाद का खंडन)

शंकर ने अपने दर्शन में 'माया' और 'अविद्या' को समानार्थी माना है। शंकर 'आवरण' को माया और 'विक्षेप' को अविद्या मानकर माया और अविद्या को एक ही वस्तु के दो पहलू बताते हैं। किंतु, बाद के वेदांतियों ने दोनों में अंतर बताया है। वास्तव में माया और अविद्या एक ही वस्तु के दो पहलू हैं। जादूगर की शक्ति उसके दृष्टिकोण से एक शक्ति है, किन्तु इसके चकमे में आनेवाले के लिए यह शक्ति अज्ञान अथवा अविद्या है। ठीक इसी प्रकार माया ईश्वर की दृष्टि से शक्ति है, किंतु माया से प्रभावित जीवों के लिए अज्ञान है। माया को भाव रूप अज्ञान कहा जाता है। यह ब्रह्म के स्वरूप पर परदा डालकर उसे विश्व के रूप में प्रदर्शित करती है।

रामानुज ने शंकर के मायावाद अथवा अविद्या सिद्धान्त के विरुद्ध अनेक आक्षेप उपस्थित किये हैं। रामानुज के द्वारा प्रस्तावित सात तर्क 'माया के विरुद्ध' अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

(1.) अविद्या का आश्रय स्थान कहाँ है? यदि यह कहा जाय कि

अविद्या का आश्रय ब्रह्म है तब शंकर का अद्वैतवाद खंडित हो जाता है क्योंकि ब्रह्म के अतिरिक्त माया का अस्तित्व मानना पड़ता है। फिर यदि यह कहा जाय कि अविद्या का निवास जीव में है तो यह भी असत्य होगा क्योंकि जीव स्वयं अविद्या का कार्य है। जो कारण है वह कार्य पर कैसे आश्रित रह सकता है। इस प्रकार अविद्या का आश्रय कोई नहीं कहा जा सकता है। इस तर्क को 'आश्रयानुपपत्ति' कहते हैं क्योंकि यह माया के आश्रय से सम्बन्धित है। रामानुज ने इस तर्क के द्वारा यह बतलाने का प्रयास किया है कि माया का कोई आश्रय नहीं है।

उत्तर में उपर्युक्त आक्षेप के अद्वैतवादियों का कहना है कि ब्रह्म ही माया या अविद्या का आधार है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि ब्रह्म स्वयं अविद्या से प्रभावित होता है। जिस प्रकार जादूगर अपनी जादू से ठगा नहीं जाता है उसी प्रकार ब्रह्म भी अविद्या से प्रभावित नहीं होता है। अविद्या का आधार होने के बावजूद ब्रह्म शुद्ध ज्ञान स्वरूप है।

(2) अविद्या ब्रह्म पर कैसे पर्दा डाल देती है?

ब्रह्म स्वयं प्रकाश है। अतः यह सोचना कि अविद्या का आवरण पड़ने से ब्रह्म का प्रकाश ढक जाता है असमान्य प्रतीत होता है। ब्रह्म का स्वयं प्रकाश, शुद्ध ज्ञान का दूसरा नाम है। चूंकि शुद्ध ज्ञान का उद्भव नहीं होता है क्योंकि वह मानसिक वृत्ति नहीं है, इसलिए इसका विनाश भी संभव नहीं है। अतः शुद्ध ज्ञान का तिरोधान असम्भव है। इस तर्क को तिरोधानानुपपत्ति की संज्ञा दी गई है।

इसके उत्तर में शंकर के अनुयायी का कहना है कि जिस प्रकार मेघ सूर्य को आच्छादित कर देता है उसी प्रकार ब्रह्म भी अज्ञान से आच्छादित हो जाता है। परन्तु इससे ब्रह्म का प्रकाशत्व नहीं खोता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मेघ सूर्य के प्रकाश को नहीं नष्ट करता है।

(3) अविद्या का स्वरूप क्या है? अविद्या को भावात्मक नहीं कहा जा सकता क्योंकि यदि यह भावात्मक है तो फिर इसे अविद्या कैसे कहा जा सकता है।

यदि अविद्या भावात्मक है तब इसका अन्त नहीं हो सकता। अविद्या को निषेधात्मक भी नहीं कहा जा सकता

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

क्योंकि यदि वह निषेधात्मक है तब वह सम्पूर्ण जगत को ब्रह्म पर आरोपित कैसे कर देती है ? इस तर्क को 'स्वरूपानुपपत्ति' कहा जाता है क्योंकि यह माया के स्वरूप के विषय में है। क्या मायास्वरूपतः ब्रह्म के द्वारा प्रकट की जा सकती है ? यदि इसे सही मान लिया जाय तो वह नित्य हो जायेगी क्योंकि ब्रह्म नित्य है। इसके अतिरिक्त जीव निरन्तर अविद्या का दर्शन करता रहेगा जिसका फल यह होगा कि वह कभी भी मुक्त नहीं हो सकेगा। अतः यह मान लेने पर कि माया ब्रह्म के द्वारा अभिव्यक्त होती है, मुक्ति असंभव हो जायेगी।

इसके उत्तर में अद्वैतवादियों का कहना है कि अविद्या को ब्रह्म में निहित मान लेने से कोई बात संभव नहीं है क्योंकि (अविद्या) स्वयं मिथ्या है। अतः यह मानना कि अविद्या स्वरूपतः कहीं निवास नहीं कर सकती है, भ्रमात्मक है।

(5) अद्वैत दर्शन में अविद्या को अनिर्वचनीय कहा गया है। सभी पदार्थ या तो सत् होते हैं या असत्। इन दो कोटियों के अतिरिक्त अनिर्वचनीय को अलग एक कोटि बनाना विरोधात्मक

प्रतीत होता है। इस तर्क को 'अनिर्वचनीयानुपपत्ति' कहते हैं। इसके उत्तर में शंकर के अनुयायी का कहना है कि अविद्या को सत और असत कोटियों से विलक्षण समझना ठीक है। इसे असत नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसकी प्रतीति होती है। इसे सत नहीं कहा जा सकता क्योंकि सत सिर्फ ब्रह्म है। अतः माया या अविद्या को अनिर्वचनीय कहना प्रमाण संगत है।

(5) अविद्या का प्रमाण क्या है? अविद्या का अर्थ है ज्ञान का अभाव। इसे भावात्मक रूप से कैसे जाना जा सकता है? अविद्या को प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द से जानना असम्भव है। इस तर्क को 'प्रमाणानुपपत्ति' कहते हैं। इसके उत्तर में शंकर के अनुयायी का कहना है कि अविद्या कोई वस्तु नहीं है। वह भाव भी नहीं है बल्कि भावरूप है। अतः यह प्रश्न उठाना कि अविद्या का ज्ञान किस प्रमाण से होता है युक्ति संगत नहीं है।

(6) ज्ञान से अविद्या का नाश नहीं हो सकता। अद्वैत-दर्शन में कहा गया है कि ब्रह्म का ज्ञान हो जाने से अविद्या का नाश हो जाता है। ब्रह्म जो निर्गुण और निर्विशेष है का ज्ञान पाना असम्भव

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

है। ज्ञान के लिए भेद नितान्त आवश्यक है। अभेद का ज्ञान स्वयं मिथ्या है। अतः वह कैसे अविद्या का अन्त कर सकता है?

इसके उत्तर में शंकर के अनुयायी का कहना है कि यह कथन कि निर्गुण निर्विशेष ब्रह्म का ज्ञान असंभव है, भ्रान्तिमूलक है। निर्गुण ब्रह्म ज्योति स्वरूप है। इसके ज्ञान के लिए ज्ञाता की अपेक्षा नहीं है। केवल अज्ञान ही ज्ञान का अवरोध करता है, के निवारण से वह प्रकाशित हो जाता है।

(7) अविद्या को भावरूप कहा गया है। जो भाव रूप है उसका नाश नहीं हो सकता। रामानुज के अनुसार अविद्या का नाश ईश्वर की भक्ति तथा आत्मा के वास्तविक ज्ञान से ही सम्भव है।

इसके उत्तर में शंकर के अनुयायी का कहना है कि व्यावहारिक जीवन में हमें रस्सी के स्थान पर साँप का भ्रम होता है। परन्तु यह भ्रम यथार्थ वस्तु रस्सी का ज्ञान होने पर नष्ट हो जाता है। अतः माया या अविद्या को भाव रूप कहना प्रमाण - संगत है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शंकर के मायावाद की आलोचना रामानुज ने इन सात तर्कों के द्वारा की है।